BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

कक्षा दसवीं

प्रिय विद्यार्थियों ,
निर्देश -----
नीचे दिए गए लिंक को ध्यान से देखो|
सभी बच्चे पाठ को ध्यान से पढ़ेंगे|
बच्चे शब्दार्थ नोटबुक में लिखेंगे |

नीचे दिए गए लिंक के द्वारा पाठ को समझें -

https://youtu.be/drToDaWJ3P4

पाठ का लिंक
http://ncertbooks.prashanthellina.com/class_10.Hindi.Sparsh/ch-11.pdf

BBPS PITAMPURA

डायरी का एक पन्ना

प्रस्तुत पाठ सीताराम सेकसरिया द्वारा डायरी शैली में लिखित है| यह ऐतिहासिक दिन 26 जनवरी 1931 का लेखा-जोखा है।

लेखक ने इस पाठ में नेताजी सुभाष चंद्र बोस, लेखक तथा कलकत्ता (कोलकाता) वासियों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस अर्थात् 26 जनवरी 1931 को किस जोश-खरोश से मनाया, अंग्रेजों ने पूरे समारोह को आयोजकों का अपराध मानते हुए उन पर कैसे-कैसे जुल्म किए, उसका पूरा ब्यौरा दिया है।

यह पाठ हमें अपने क्रांतिकारियों की याद दिलाता है। पाठ यह भी बताता है कि एक संगठित समाज यदि किसी भी कार्य के लिए दृढ़ संकल्प होकर कार्य करे तो ऐसा कोई कार्य नहीं जो न हो।
डायरी शैली में लेखक ने वातावरण को साकार कर दिया है।

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 26 जनवरी : आज का दिन तो अमर दिन है । आज के ही दिन सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस वर्ष भी उसकी पुनरावृत्ति थी जिसके लिए काफ़ी तैयारियां पहले से की गई थीं। गत वर्ष अपना हिस्सा बहुत साधारण था| इस वर्ष जितना अपना दे सकते थे, दिया था। केवल प्रचार में दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था | सारे काम का भार अपने ऊपर समझते थे, और इसी तरह जो कार्यकर्ता थे उनके घर जा-जाकर समझाया था। बड़े बाजार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे| उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रेफ़िक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्को तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।

प्रश्न

(क) इस गद्यांश में किस विशेष अवसर का वर्णन हुआ है?
(ख) रास्तों पर उत्साह और नवीनता के कारणों को स्पष्ट करें।
(ग) राह चलते मनुष्य किस दृश्य से उत्साहित हो उठते थे?

2. मोनुमेंट के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो भोर में छह बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में घेर लिया था पर तब भी कई जगह तो भोर में ही झंडा फहराया गया। श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा-बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए पर वे भीतर न जा सके। वहाँ पर काफी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गए। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला जिसमें बहुत-सी लड़कियाँ थीं|
उनको गिरफ्तार कर लिया। ग्यारह बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालयों में झंडोत्सव मनाया। जानकीदेवी, मदालसा (मदालसा बजाज-नारायण) आदि भी गई थीं। लड़कियों को, उत्सव का क्या मतलब है, समझाया गया। एक बार मोटर में बैठकर

सब तरफ घूमकर देखा तो बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। जगह-जगह फ़ोटो उतर रहे थे। हमने भी फोटो का काफ़ी प्रबंध किया था। दो-तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया। जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।

प्रश्न

(क) शाम को सभा कहाँ होने वाली थी? पुलिस ने सभास्थल को क्यों घेर लिया था?
(ख) तारा सुन्दरी पार्क में झंडा फहराने का प्रयास किसने किया? उस दौरान क्या हुआ?
(ग) दो-तीन बजे पकड़े गए कई आदमियों में दो प्रमुख व्यक्ति कौन-कौन थे?

3. करीब आठ बजे खादी भंडार आए तो कांग्रेस ऑफ़िस से फ़ोन आया कि यहाँ बहुत आदमी चोट खाकर आए हैं और कई की हालत संगीन है उनके लिए गाड़ी चाहिए। जानकी देवी के साथ वहाँ गए, बहुत लोगों को चोटें लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देख-रेख तथा फ़ोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक 67 आदमी वहाँ आ चुके थे। बाद में तो 103 तक आ पहुंचे। अस्पताल गए लोगों को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुँचे और जो लोग घरों में चले गए, वे अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल जरूर हुए हैं। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चला पर लाल बाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया और लोग सोचने लग गए कि यहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है|

प्रश्न

(क) कांग्रेस ऑफिस से क्या फोन आया?
(ख) कलकत्ता के नाम पर लगा कौन-सा कलंक धुल गया था?
(ग) कलकत्ता में हुए संघर्ष की बात सुनकर लोग क्या सोचने लगे?
**निम्न मुहावरों के अर्थ दिए गए है ,आप मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए |
1.टूट जाना (निराश हो जाना)
2 . ठंडा पड़ना (शांत होना)
3. रंग दिखाना (असलियत सामने लाना)

<u>निर्देश</u> - दिए गए संकेत- बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित विषय पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।
युवाओं के लिए मतदान का अधिकार
संकेत बिंदु, --- *मतदान का अधिकार क्या और क्यों? *जागरूकता की आवश्यकता *सुझाव